thearyasamaj.org

ओ३म्

वार्षिक शुल्क 50/- रु.
आजीवन 500/- रु.
इस अंक का मूल्य 5/- रुपये

आर्य प्रेरणा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक मुख-पत्र)
दूरभाषः 011-25760006 Website - www.aryasamajrajindernagar.org
वर्ष-8 अंक 4, मास अप्रैल 2015 विक्रमी संवत् 2072
दयानन्दाब्द 189 सृष्टि संवत् 1960853115, सम्पादक डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी

-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, राष्ट्रपति

सभी भाषाविद् इस विषय में एक मत हैं कि संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है तथा ऋग्वेद सबसे अधिक प्राचीन प्रकाशित ग्रन्थ है। भारत की सभी भाषाओं की वह जननी है। पाश्चात्य भाषाओं पर भी उसका प्रभाव देखा गया है। महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति ने 11 नवम्बर 1955 में तिरुपति में संस्कृत विश्व परिषद के वार्षिकोत्सव पर संस्कृत को भारतीय भाषाओं की जननी माना था। हमें इस बात का दुःख है कि क्षुद्र राजनीति से प्रेरित कुछ नेता प्रान्तवाद, क्षेत्रवाद की संकीर्णता में उलझकर इस सर्वसम्मत विचारधारा का विरोध आज भी कर रहे हैं। राष्ट्रीय एकता के संवर्धन हेतु, संस्कृत भाषा की महत्ता असन्दिग्ध है। हम देव भाषा संस्कृत के माध्यम से भारत की सभी भाषाओं को एकसूत्र में पिरो सकते हैं जिसका सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रभाव निश्चय ही सुखद परिणाम देने वाला होगा।

मुझे इस बात का बहुत हर्ष है कि मैं पहले की भांति इस वर्ष भी संस्कृत विश्व परिषद् के वार्षिकोत्सव में भाग ले रहा हूं, जो वैंकटेश्वर की पवित्र नगरी तिरुपति में हो रहा है। मैं संस्कृत का विद्वान् नहीं हूँ और न यह दावा कर सकता हूँ कि मैं इस भाषा के अध्ययन के लिए अपनी इच्छा के अनुरूप समय दे सकता हूँ।

नम्रतापूर्वक केवल इतना ही कह सकता हूँ कि संस्कृत के प्रति मेरी अगाध श्रद्धा और प्रेम है। संस्कृत के प्रति निजी दृष्टिकोण का जब मैं विश्लेषण करता हूं तो इस श्रद्धा के दो कारण दिखाई देते हैं- संस्कृत भाषा की उपादेयता और हमारी भावुकता। संस्कृत वह भाषा है जिसमें भारत की संस्कृति, हमारे अतीत का गौरव तथा भारत की आध्यात्मिक आकांक्षाएं आदि सभी प्रतिबिम्बित होती हैं। भारतीय ज्ञान-भण्डार सस्कृत के अतिरिक्त पालि और प्राकृत में भी उपलब्ध हैं किन्तु ये दोनों भाषाएं भी संस्कृत से मिलती-जुलती हैं। वास्तव में, पालि और प्राकृत का महत्व स्वयं संस्कृत के अध्ययन के पक्ष में एक प्रमाण है, क्योंकि संस्कृत के ज्ञान के बिना इन भाषाओं को ठीक-ठीक समझना सम्भव नहीं। चाहे हम इस देश के प्रसिद्ध दर्शन-शास्त्र का अध्ययन करें अथवा नृत्य तथा संगीत आदि भारत की ललित कलाओं के विकास की खोज करें या इस देश के प्राचीन इतिहास के टूटे हुए क्रम को जोड़ने का प्रयास करें, इन सभी कार्यों के लिए संस्कृत का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

यह सभी जानते हैं कि सुप्रसिद्ध विदेशी विद्वानों ने अपने गहन तथा आलोचनात्मक अध्ययन द्वारा संस्कृत साहित्य की विशेष सेवा की है। यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि उन विद्वानों के अध्यवसाय के बिना मानवीय विचार तथा संस्कृति के विकास में संस्कृत का जो ऊंचा स्थान रहा है, उसे समझना असम्भव हो जाता। रोज़र ने भतृहरि के पदों का डच भाषा में सतरहवीं सदी में अनुवाद किया था। अठारहवीं सदी में विलसन महाशय ने काशी में अध्ययन किया और भगवद्गीता, हितोपदेश तथा शकुन्तला का अंग्रेजी में अनुवाद किया। शिलर तथा गेटे सरीखे प्रसिद्ध जर्मन कवि इन अनुवादों से अत्यधिक प्रभावित हुए थे। कौलब्रुक की चिरस्थायी कृतियां-संस्कृत कोश, हिन्दू विधि, संस्कृत व्याकरण और किरातार्जुनीय का अनुवाद-उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रकाशित हुई। लगभग इसी समय रूसी भाषा में रामायण और महाभारत के अनुवाद भी प्रकाशित हुए। रोज़र और मैक्समूलर ने 1840-70 में वेदों का अनुवाद किया। कई विदेशी विश्वविद्यालयों में 100 वर्ष हुए संस्कृत अध्यापन के लिए पृथक् विभाग खोले गये थे। जर्मन और फ्रांसीसी विश्वविद्यालयों में

'आर्य-प्रेरणा' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

thearyasamaj.org

1792 में ही संस्कृत-अध्यापन की व्यवस्था हो गई थी। आजकल काबुल विश्वविद्यालय में संस्कृत अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है।

इन सब बातों के कारण ही मैं समझता हूं कि संस्कृत का पठन-पाठन बहुत उपयोगी है। दूसरी बात, भावुकता के सम्बन्ध में जो मैंने कही, उसकी आधार भी संस्कृत की उपादेयता ही है। जैसा मैंने अभी कहा संस्कृत साहित्य इस देश का बृहत् ज्ञान-भण्डार है, जिसमें इस देश की दर्शन तथा कला सम्बन्धी विचारधारा सन्निहित है। भारत की राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं और सांस्कृतिक परम्परा का प्रमुख माध्यम होने के अतिरिक्त, संस्कृत आधुनिक भारतीय भाषाओं का उद्गम-स्रोत भी है। दक्षिण की चार भाषाओं पर भी जो भाषा-विज्ञान की दृष्टि से द्रविड़ कुल की भाषाएं हैं, पारस्परिक सम्पर्क तथा आदान-प्रदान के कारण संस्कृत का गहरा प्रभाव पड़ा है।

मैंने प्रायः यह सुना है कि सदियों तक समस्त भारत को एकता के सूत्र में बांधे रखने का श्रेय संस्कृत भाषा को है। मुझे इस कथन में काफी सच्चाई जान पड़ती है। आप कल्पना कीजिए कि दो हजार वर्ष पूर्व जब कि भूगोल तथा विस्तार की दृष्टि से हमारा देश आधुनिक भारत से बड़ा था, दूरस्थ प्रदेशों के निवासी किसी प्रकार पारस्परिक व्यवहार करते होंगे और आपसी सम्पर्क बनाये रखते होंगे। उस प्राचीन काल में जिन दिनों आज की तुलना में यातायात के साधन न होने के बराबर थे, समस्त देश में सामान्य रीति रिवाज धार्मिक विश्वास और लगभग एक जैसी शिक्षा पद्धति किस प्रकार सम्भव हुई होगी। साधारण अभिव्यक्ति और साहित्य का एक सामान्य माध्यम प्राप्त होने के कारण ही सब कुछ हो सका, और यह निर्विवाद है कि वह माध्यम संस्कृत भाषा थी। प्रादेशिक भाषाएं निस्सन्देह विभिन्न प्रदेशों में बोली जाती थीं किन्तु प्राचीन काल में यदि किसी भाषा को राष्ट्रभाषा कह सकते थे तो वह संस्कृत थी। इसका उन दिनों वह पद रहा होगा जो आधुनिक काल में विभिन्न देशों में उनकी राष्ट्रभाषाओं का है। इस देश के सांस्कृतिक विकास में संस्कृत का कितना ऊंचा स्थान है, यह समझने में किसी को कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

मेरा यह अभिप्राय नहीं कि हम संस्कृत को फिर से अन्तर्प्रादेशिक आसन पर पदासीन कर दें या ऐसा कर सकते हैं, यद्यपि मुझे ज्ञात है कि कुछ लोगों द्वारा इस प्रकार की मांग भी की गई है। इस सम्बन्ध में संस्कृत की व्यावहारिकता तथा वांछनीयता के बारे में कुछ न कह कर मैं इतना ही निवेदन करना चाहूंगा कि आज की परिवर्तित स्थिति में भी संस्कृत का अध्ययन इस देश के लिए निस्सन्देह बहुत मूल्यवान सिद्ध होगा। इस भाषा का पद हम चाहे जो निर्धारित करें यह तो स्वीकार करना ही होगा कि यह हमारी सभी आधुनिक भाषाओं की आधारशिला है।

विभिन्न भारतीय देश एक दूसरे से काफी दूर स्थित हैं और उन सबकी अपनी अपनी विशेषताएं, रीति-रिवाज और परम्पराएं है। यह सब होते हुए भी जब उत्तर भारत का निवासी दक्षिण भारत के जीवन में उसी प्रकार की आस्थाएं और कर्मकाण्ड देखता है, तो वह मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता। कुछ महीने हुए जब मैं वन-महोत्सव के दिन संयोग से हैदराबाद के किसी ग्राम में था मुझे वृक्षारोपण के लिए कहा गया। वृक्ष लगाने से पूर्व जिन मन्त्रों आदि का उच्चारण किया गया और जिस विधि का अनुसरण किया गया, वह ठीक वही थी जो प्रति वर्ष मैं राष्ट्रपति भवन में देखता हूं। यह सादृश्य उन सभी रिवाजों के सम्बन्ध में देश में पाया जाता है, जिन्हें हम सोलह संस्कार कहते हैं और जिनका पालन करना प्रत्येक हिन्दू अपना कर्तव्य समझता है।

यही कारण है कि आपकी परिषद् का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत के अध्ययन को प्रोत्साहन देना और इस देश में उस भाषा को उसके महत्व के अनुरूप स्थान दिलाना है। निस्सन्देह, इस सभा में उपस्थित विद्वत्मण्डली इस विषय पर विवेचनात्मक रूप से विचार करेगी और इस दिशा में देश का नाथ-प्रदर्शन कर सकेगी। इस सत्प्रयास में मैं हृदय से परिषद् की सफलता की कामना करता हूं।

देश भक्ति

पुकारता, है कारगिल
पुकारती माँ भारती ।
खून से तिलक करो
गोलियों से आरती।।
देश धर्म पर मिटने को
जो मानव तैयार नहीं।
वीर नहीं वह कायर है
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

जिस तरह वृक्षों में
चन्दन को बड़ा अधिकार है।
पर्वतों में हिमगिरी नदियों में
गंगा धार है।।
पक्षियों में जिस तरह
गरुड़ सबका सरदार है।
फलों में आम और
गुलाब की महकार है।
है कमल पुष्पों में और
नागों में शेष नाग है।
ऐसे सब देशों से उत्तम
अपना भारत महान है।।

प्रण करते हैं संस्कृति
की शाम नहीं होने देंगे।
वीर शहीदों की समाधि को
बदनाम नहीं होने देंगे।
जब तक रगों में गर्म खून की
एक भी बून्द बाकी है।
भारत की आजादी को
गुमनाम नहीं होने देंगे।।

अंकित है इतिहास हमारा
त्याग पूर्ण बलिदानों से ।
कौन नहीं है जग में
परिचित आर्यवीर सन्तानों से।।

जीना मरना लगा दुनिया में जीना
किसी को आता नहीं।
देश हित में जो मरा बलिदान
व्यर्थ जाता नहीं।।
दर्द की भी सीमा होती है
अधिक सहा जाता नहीं।
वह राष्ट्र गुंगा होता है
जो शहीदों के गीत गाता नहीं।।
जिगर उनका ही होता है,
कफन बाँध जो फिरता है।
वही कुछ कर गुजरते हैं,
वो सौदा सिर का करते हैं।।

धन्य है वीर हकीकत राय,
धन्य-धन्य वीर बलिदानी।
देगी नव जीवन जन-जन को
तेरी अमर कहानी।।

thearyasamaj.org

प्रभु इच्छाओं को जानना तथा उन पर चलना ही धर्म है!

- डा0 जगदीश गांधी,
शिक्षाविद् एवं संस्थापक-प्रबन्धक,
सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

धर्म के नाम पर होने वाली मारा-मारी सिर्फ अज्ञानता की देन है :-

परम पिता परमात्मा की ओर से युग-युग में आये अवतारों को अलग-अलग मानने के कारण धर्म के नाम पर चारों ओर जमकर मारामारी हो रही है पिछले 5000 वर्षों के इतिहास में महाभारत को छोड़कर कोई भी युद्ध धर्म के नाम पर अब तक नहीं लड़ा गया है। कृष्ण के द्वारा महाभारत युद्ध की रचना धरती पर न्याय की स्थापना के लिए करनी पड़ी थी। **आज धर्म के नाम पर होने वाली मारा-मारी सिर्फ अज्ञानता की देन है। धर्म तो केवल ईश्वर की इच्छाओं को जानना और उन शिक्षाओं पर चलना है।** वास्तव में जब हम इस सच्चाई को हृदय से स्वीकार करेंगे कि हम सब एक ही परमात्मा की संतानें हैं तब आपसी भेदभाव तथा मारामारी दूर हो जायेगी।

हम सबका परमात्मा एक है, अनेक नहीं :-

सभी पवित्र पुस्तकों में दिया गया दिव्य ज्ञान परमात्मा ने युग-युग में मानवजाति की आवश्यकता के अनुसार संसार के विभिन्न स्थानों पर, स्थानीय भाषाओं में, उस युग के युगावतारों के माध्यम से भेजा हैं। कालान्तर में यही दिव्य ज्ञान संसार की विभिन्न भाषाओं में अनुवादित होकर सारे संसार में फैल गया। परमात्मा का कोई नाम नहीं हैं। विश्व के लोगों ने अपनी-अपनी भाषा में परमात्मा को ईश्वर, रब, खुदा, वाहे गुरू, गॉड आदि अनेक नामों से पुकारने के साथ ही उनकी पूजा, इबादत, प्रेयर, पाठ करने के लिए अलग-अलग तरह की पूजा पद्धतियाँ तथा अलग-अलग तरह के पूजा स्थल जैसे मंदिर, मस्जिद, गिरजा, गुरूद्वारे आदि बना लिये हैं।

धर्म न कभी बदला है और न कभी बदलेगा :-

परमात्मा ने इस सृष्टि के प्रथम प्राणी "एडम और ईव"(या मनु एवं शतरूपा) के धर्म (कर्त्तव्य) को निर्धारित करते हुए आज्ञा दी कि देखो "एडम एवं ईव" **तुम्हारा धर्म या कर्त्तव्य होगा मेरी आज्ञाओं को जानना तथा उन पर चलना।** और मेरा धर्म या कर्त्तव्य होगा कि जो व्यक्ति मेरी आज्ञाओं को पवित्र मन से भली भांति जानकर उन पर चलेंगे उनका 'कल्याण करूँगा अन्यथा विनाश करूँगा'। परमात्मा ने इस सृष्टि के प्रथम प्राणी "एडम और ईव" को बताया कि मेरे और तुम्हारे दोनों के धर्म (कर्त्तव्य) शाश्वत तथा अपरिवर्तनीय होंगे और कभी भी सृष्टि के अनन्त काल तक न तो मेरे धर्म (कर्त्तव्य) में कोई परिवर्तन होगा और ना ही तुम्हारे (मनुष्य) के धर्म (कर्त्तव्य) में। इस प्रकार धर्म एक ही है अनेक नहीं। धर्म न कभी बदला है और न कभी बदलेगा। गीता में भी धर्म को कर्तव्य बताया गया है।

यह शरीर हमें मानव जाति की भलाई के लिए ही मिला हुआ है :-

हमें शरीर के सभी अंग जैसे आंख, कान, वाणी, मस्तिष्क, हाथ, पैर आदि इसलिए मिले हैं कि हम अपने इन अंगों के सहयोग से पूरे उत्साह से परमात्मा का कार्य करें। हमारा शरीर एक यंत्र मात्र है। उदाहरण के लिए जब हम किसी शहर में घूमने जाते हैं तो घूमने के लिए वहाँ साईकिल या कोई अन्य वाहन किराये पर लेते है। इसी प्रकार परमात्मा ने संसार में प्रभु का कार्य करने के लिए यह शरीर रूपी साईकिल दी है। आत्मा इस शरीर रूपी साईकिल का सवार है। **यह शरीर हमें ईश्वरीय आज्ञाओं के पालन के लिए मिला हुआ है।** परमात्मा कहता है कि तेरा शरीर मेरे काम के लिए है और मेरा कार्य है सारी मानवजाति का कल्याण। अतः तू अपने इस शरीर का उपयोग सारी मानवजाति की भलाई के लिए करना।

परमात्मा की इच्छाओं और आज्ञाओं के अनुकूल ही हमारा कार्य होना चाहिए :-

परमात्मा कहता है कि हे प्राणी तुम्हें जो मैंने आँखें दी हैं, वो ईश्वरीय महिमा का दर्शन करने के लिए दी है। इसलिए व्यर्थ की चीजें को हम अपनी इन आँखों से न देखे। ईश्वर कहता है कि तेरी आँखें मेरा भरोसा है। तू इसको व्यर्थ की इच्छाओं से धूमिल न कर। तेरे कान मैंने तुझे अपनी पवित्र वाणी को सुनने के लिए दिये हैं। इन कानों से तू मेरी आज्ञा एवं इच्छाओं के विपरीत कोई बात न सुने। तेरा हृदय मेरे गुणों का खजाना है। तेरे स्वार्थरूपी हाथ कही मेरे गुणों रूपी खजाने को लूट न लें। मैंने तुझे जो हाथ दिये हैं वो इसलिए कि तेरे हाथों में मेरी ज्ञान की पुस्तकें हों। इन हाथों से तू उन्ही कामों को कर जो मैंने सभी पवित्र पुस्तकों में दी हैं।

एक ही छत के नीचे हो अब, सभी धर्मों की प्रार्थना :-

इस प्रकार स्पष्ट है कि युग-युग में न्याय, समता, करूणा, भाईचारा, त्याग एवं हृदयों की एकता आदि का दिव्य ज्ञान एक ही परमपिता परमात्मा से प्राप्त हुआ है। इसलिए स्कूलों में बच्चों एवं टीचर्स के द्वारा की जाने वाली सामूहिक प्रार्थना की तरह ही समाज में भी सभी धर्मों, जातियों एवं सम्प्रदायों के लोगों को परमपिता परमात्मा की एक ही छत के नीचे एक ही जगह पर इकट्ठे होकर सामूहिक रूप से एक ही परमपिता परमात्मा की प्रार्थना करनी चाहिए।

इस पर एक बहुत ही सुन्दर गीत है :-

एक ही छत के नीचे हो अब
- सब धर्मों की प्रार्थना,
परम पिता है एक सभी का
- सब में हो ये भावना!
अलग अलग राहें क्यों हैं
- जब मंजिल सबकी एक है
भाषाओं का खेल है सारा
- मालिक सबका एक है
मानव धर्म हो सबसे ऊँचा

thearyasamaj.org

- सबमें हो सद्भावना!
परमपिता है एक सभी का
सब में हो ये भावना!
ना हिन्दू का राम है
- ना अल्लाह मुस्लिम भाई का
ना नानक का सिख अकेला
- ना ईसा ईसाई का
परमशक्ति है एक सभी की
- करें उसी की साधना!
परमपिता है एक सभी का
सब में हो ये भावना!
विद्यालय के पाठ्यक्रमों में
- एक विषय अनिवार्य हो
एकता का पाठ पढ़ें
- सब धर्मों का सम्मान हो
सबके मन में सबके लिए हो
- उन्नति की शुभ कामना
परमपिता है एक सभी का
सब में हो ये भावना!

प्रभु इच्छाओं को जानना तथा उन पर चलना ही धर्म है :-

इस प्रकार हम संसार भर में प्रचलित विभिन्न धर्मों में से किसी भी धर्म, व उसके चिन्ह को स्वीकार करें, हम उस परमपिता परमात्मा की प्रार्थना हम मंदिर में करें, मस्जिद में करें, गिरजाघर में करें या गुरूद्वारे में करें, और चाहे किसी भी भाषा में करें, हमारी प्रार्थनाओं को सुनने वाला परमात्मा एक ही है। इस प्रकार परमपिता परमात्मा की प्रार्थना करने के लिए किसी विशेष प्रकार के चिन्ह, वेश-भूषा, भाषा, जाति-धर्म, स्थान आदि का कोई लेना-देना नहीं है। वास्तव में परमपिता परमात्मा की ओर से युग-युग में आये किसी भी महान पुरुष ने कोई अलग धर्म नहीं दिया है। जिस प्रकार से परमपिता परमात्मा शाश्वत और अपरिवर्तनीय है उसी प्रकार से उसका धर्म भी शाश्वत और अपरिवर्तनीय है। मनुष्य का सदैव से एक ही धर्म (कर्तव्य) रहा है - प्रभु इच्छाओं को जानना तथा उन पर चलना। पवित्र पुस्तकों में एक ही परमपिता परमात्मा के द्वारा भेजी गई न्याय, समता, करूणा, भाईचारा, त्याग एवं हृदयों की एकता की शिक्षाओं को जानना तथा उसके अनुसार संसार में रहकर पवित्र भावना से प्रभु की इच्छाओं और आज्ञाओं के अनुसार कार्य करना ही हर प्राणी का धर्म है। इस प्रकार प्रभु की इच्छाओं को जानकर तथा उनके अनुसार कार्य करने के अलावा किसी भी प्राणी का और कोई भी दूसरा धर्म नहीं है।

सत्संग भवन का उद्घाटन

आर्य महिला आश्रम में नवनिर्मित "महाशय धर्मपाल सभागार" सत्संग भवन का उद्घाटन 4.2.2015 को वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ महाशय धर्मपाल जी के सुपुत्र श्री राजीव गुलाटी धर्म पत्नी सहित, के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस पवित्र अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री महाशय धर्मपाल जी पधारे तथा पूरे आश्रम को आशीर्वाद प्रदान किया, आर्य जगत के यशस्वी विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, डॉ. देवेश प्रकाश, श्री अंकित शास्त्री आदि विद्वानों का मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ। आर्य महिला आश्रम की प्रधाना श्रीमती आदर्श सहगल जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। मंत्राणी जगदीश वधवा ने अतिथियों का परिचय दिया। आर्यसमाज राजेन्द्रनगर के अधिकारी श्री सतीश मैहता जी, श्री नरेन्द्र वलेचा जी, उपस्थित रहे तथा अन्त में आर्यसमाज के प्रधान श्री अशोक सहगल जी ने सबका धन्यवाद प्रकट कर कार्यक्रम का समापन किया।

निवेदक
आर्य महिला आश्रम
न्यू राजेन्द्र नगर

विश्वशान्ति एवं सद्भावना यज्ञ संपन्न

विकासपुरी स्थित अर्जुन अपार्टमेन्ट में अशोक सहगल जी के निवास स्थान पर विगत मास 1 मार्च 2015 को विश्व में शान्ति एवं सद्भावना की वृद्धि के लिए वहाँ के निवासियों द्वारा एक विशाल यज्ञ का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

वेद मन्त्रों की पावनध्वनि और स्वाहाकार से समस्त वातावरण गुंजायमान हो उठा। स्थानीय निवासियों तथा बाहर से आये श्रद्धालु जनों द्वारा मन्त्रमुग्ध भाव से विश्व शान्ति के निमित्त आहुतियाँ अर्पित की गईं। इस अवसर पर समारोह के संयोजक आर्य केन्द्रीय सभा के पूर्व महामन्त्री एवं आर्य जगत् के यशस्वी आर्य नेता श्री अशोक सहगल ने कार्यक्रम में पधारे हुए सभी आर्य बन्धुओं का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन किया। यज्ञ के ब्रह्मा डा. कैलाश चन्द्र ने आये हुए समस्त प्रबुद्ध जनों का आह्वान करते हुए उन्हें आर्यसमाज तथा वैदिक विचारधारा से जुड़ने की प्रेरणा दी। धन्यवाद ज्ञापन और ऋषिलंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-अतुल सहगल

श्रद्धांजलि

श्रीमती पुष्पा देवी कपूर जी 88 वर्ष, की आयु में दिनांक 7 जनवरी 2015 को स्वर्गवास हो गया। आप आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली की स्थापना समय की सदस्या थीं तथा आर्य समाज की उन्नति में आपका सराहनीय योगदान था। उनका जीवन आर्य समाज के विचारों के प्रचार-प्रसार में बीता। उनका सम्पूर्ण परिवार आर्य विचारधारा से ओत प्रोत है और विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों से जुड़ा है। उनके निधन से आर्य परिवार का एक महत्वपूर्ण सदस्य चला गया। प्रभु उस पुण्य आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे।

thearyasamaj.org

'भारतीय नारी और हमारा समाज'

चर्चा

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

यह संसार या ब्रह्माण्ड ईश्वर की अपौरूषेय कृति है। अपौरूषेय ऐसी कृति होती है कि जिसे मनुष्यादि कोई प्राणी अकेला या सब मिलकर भी बना न सकें। अतः अपौरूषेय कृति सदैव ईश्वर द्वारा ही रचित होती है। ईश्वर है या नहीं? आज कल पश्चिमी शिक्षा में दीक्षित व इन्हीं आचार-विचारों में पले व बढ़े प्रायः सभी व्यक्ति ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते। बहुत से तो ईश्वर के अस्तित्व को ही नहीं मानतें और जो मानते भी हैं तो वह नाना प्रकार के देवी-देवताओं, गुरूओं, फकीरों या कब्रों की पूजा के रूप में मानते हैं। उनका प्रायः कहना होता है कि हमारे सभी काम उन-उन मूर्तियों, गुरूओं, सन्त-फकीरों व कब्रों से पूरे हो रहे हैं तो वह उनको क्यों न माने? आज दिनांक 12 जुलाई 2014 को देहरादून में वर्तमान में बहुचर्चित एक सन्त की शोभायात्रा देखी जिसमें बड़ी संख्या में स्त्री व पुरूष भव्य वेश-भूषा में सम्मिलित थे। हमारी दृष्टि में इस प्रकार के कार्य करना उद्देश्यहीन होने से बहुत बड़ी अज्ञानता है। ऐसे लोगों को समझाना प्रायः असम्भव सा है। वह सुनने व समझने के लिए तैयार ही नहीं होते। तर्क व युक्ति, जिससे कि सत्य का निर्णय होता है, उन्हें स्वीकार्य नहीं है। वह तो अपने मन की भावना या आवाज को, जो शुद्ध व पवित्र ज्ञान से सर्वथा रहित है, को सुनते हैं जो अज्ञान से युक्त होने के कारण उन जड़ मूर्तियों की पूजा को स्वीकार करती है जिनसे हमें कोई लाभ तो नहीं होता परन्तु हानियां बहुत होती हैं। एक अन्ध-विश्वास को मानने पर उसके साथ अनेकों अन्धविश्वास और जुड़ते जाते हैं, यह भी एक बहुत बड़ी हानि मूर्ति पूजा करने वालों की होती है।

ईश्वर ने इस सृष्टि को जीवात्माओं के सुख के लिए बनाया है। सुख व दुःख जीवात्माओं के कर्मों के अनुसार परमात्मा देता है। हमें मानव शरीर, कुछ को पशुओं व पक्षियों आदि के शरीर भी उनके कर्मानुसार ईश्वर ने दिये हैं। हम जानते हैं कि स्त्री व पुरूष से ही यह सृष्टि आबाद व संचालित है। यदि सभी पुरूष हों या सभी स्त्रियां हों, तो भी सृष्टि चल नहीं सकती। ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि कर मनुष्यों व प्राणीजगत को बनाया और उसके बाद से मैथुनी सृष्टि आरम्भ हो गई। मैथुनी सृष्टि का तो हमारे सामने प्रत्यक्ष प्रमाण है परन्तु अमैथुनी सृष्टि ही आरम्भ में एकमात्र विकल्प होता है। इस विषय में डारविन आदि पाश्चात्य विद्वानों ने जो कल्पायें की हैं उसमें विज्ञान, तर्क व बुद्धि का आश्रय न लेकर अपने मत व मजहब की रक्षा का उद्देश्य ही दृष्टिगोचर होता है। इससे सिद्ध होता है कि ईश्वर ने संसार को चलाने के लिए स्त्री व पुरूष दोनों को बनाया है जिससे संसार भी चले और जीवात्मायें अपने जन्म-जन्मान्तरों के कर्मों, जिन्हें प्रारब्ध कहते हैं, उनका फल भी भोग सकें। इस विवरण से ज्ञात होता है कि नारी या स्त्री संसार को चलाने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संसार में सर्वत्र पुरूष व स्त्री की संख्या के अनुपात से यह सिद्ध होता है कि ईश्वर ने ही यह सृष्टि बनाई है व वही इसे चला रहा है अन्यथा सभी स्त्री या सभी पुरूष ही जन्म लिया करते।

अब प्रश्न सम्मुख आता है कि नारी व पुरूष का आचरण व आचार-विचार कैसे होने चाहिये? इसके लिए हमें यह देखना है कि ईश्वर हमसे चाहता क्या है? अनुसंधान व खोज करने पर ज्ञात होता है कि ईश्वर ने अपना एक विधान सृष्टि के आरम्भ में दिया था जिसमें जीवनयापन व इससे जुड़े सभी प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं। ईश्वर चाहता है कि मनुष्य, स्त्री व पुरूष का आचरण शुद्ध व पवित्र होना चाहिये। उन्हें ब्रह्मचर्य का सेवन व पालन करना चाहिये जिससे उनके शरीर बलिष्ठ रहे। वेद एवं वेदानुकूल शास्त्रों का अध्ययन कर उनकी शिक्षाओं का पालन करते हुए ही सभी गृहस्थियों को सन्तानों को उत्पन्न करना चाहिये और शेष जीवन ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सिद्धि के लिये प्रयत्न करने चाहिये जिससे वह 31 नील 10 अरब व 40 अरब वर्षों की लम्बी अवधि तक दुःखों से सर्वथा दूर रह कर, जन्म-मरण से रहित, मोक्ष व मुक्ति की अवस्था में पूर्ण आनन्द को प्राप्त रहें। इस विषय के विस्तृत ज्ञान सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का नवम् समुल्लास पढ़ना अत्यन्त उपयोगी है।

वेदों के आधार पर हमें प्रतीत होता है कि स्त्री का किशोर अवस्था में विद्याध्ययन करना, सोलहवें वर्ष से आरम्भ यौवनावस्था व उसके पश्चात विवाह करना, सन्तान उत्पन्न करना, उनका लालन व पालन तथा उन्हें अच्छे गुरूकुल, विद्यालय में भेजकर सुशिक्षित व संस्कारित करना उनका मुख्य कर्तव्य हैं। इसके साथ स्त्री ने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार गृहस्थ जीवन में रहते हुए उसका समाज व देश के लिए जो उपयोग हो सकता है, वह करना चाहिये। शिक्षित स्त्रियों के लिए शिक्षण व अध्यापन का कार्य महत्वपूर्ण है। आजकल की परिस्थितियों में वह किसी गुरूकुल या विद्यालय में अपने अध्येय विषयों को पढ़ा सकतीं हैं। हम समझते हैं कि सारे देश व विश्व में संस्कृत का महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट आर्ष प्रणाली से अध्यापन आवश्यक होना चाहिये। इसका महत्व यह है सभी लोग ईश्वर की भाषा को जानकर ईश्वर के सन्देश को, जो वेदों में विहित व निहित है, जान सकेंगें। **वेद ईश्वर-रचित हैं व सूर्य के समान स्वतः प्रमाण ग्रन्थ हैं।** वेद ऐसे ग्रन्थ हैं जो सृष्टि के आरम्भ में भी प्रासंगिक थे, आज भी हैं और भविष्य में भी रहेगें। वेदों का अध्ययन करके ही हम इस संसार के उत्पत्तिकर्ता और स्वयं की जीवात्मा का सत्य व यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। मानव जीवन के कर्तव्य जिनके करने से जीवन के उद्देश्य, भोग व अपवर्ग, की प्राप्ति में सहायता मिलती हैं, वह जान कर उनका आचरण, पालन व उनकी साधना कर सकेगें। संसार के अन्य ग्रन्थों से यह कार्य व जीवन के उद्देश्य का पूरा होना सम्भव नहीं है। आजकल यह कार्य सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों ने सरल कर दिया है परन्तु यह ग्रन्थ तो दीपक के समान हैं, असली सूर्य तो वेद ही हैं। दीपक की आवश्यकता प्रायः रात्रि व अन्धकार के समय में ही पड़ती है, दिन में जब सूर्य प्रकाशित हो रहा हो तो दीपक की सहायता की आवश्यकता नहीं होती। अतः वेदों का अध्ययन प्रासंगिक, अनिवार्य व अपरिहार्य है। **सभी स्त्रियों व पुरूषों के लिए वेदाध्ययन अति आवश्यक है अन्यथा जीवन व्यर्थ होगा। देश-विदेश की सभी नारियां जब वेद ज्ञान से सम्पन्न होगीं तभी वह अन्धविश्वास, पाखण्ड, अज्ञानता, कुरीतियों से बच सकेगी, नहीं तो आजकल जैसा हम देश-विदेश में देख रहे हैं कि सर्वत्र मूर्तिपूजा, पाखण्ड, फलित ज्योतिष, अवतारवाद की मिथ्या मान्यता व नाना प्रकार के अन्धविश्वास, धर्म व मजहाबों में मिथ्या दया, प्रलोभन व हिंसा आदि से लोग ग्रसित हैं, वह जारी रहेगा और सबका जीवन व्यर्थ हो जायेगा।** इस गलती के कारण सभी मनुष्यों को परजन्मों में कितने दुःखों व नरक को भोगना पड़ेगा, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। हां, वेदों की शिक्षा के साथ ज्ञान-विज्ञान के सभी विषयों का अध्ययन, अध्यापन, उनसे जुड़ी लाभप्रद सेवा आदि कार्यों को करने की कोई मनाही नहीं है, **परन्तु हम समझते हैं कि स्त्रियों को वेद निर्दिष्ट मर्यादापूर्ण जीवन को ही अपनाना चाहिये।** पंश्चिम की दिखावे, प्रदर्शन, नाना प्रकार के वस्त्रों व वेशभूषा को धारण कर प्रदर्शन की प्रवृत्ति जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति में घातक व हानिकारक है, इससे बचना होगा। आजकल अंग्रेजी बोलना एक फैशन हो गया है। यह हमारी बौद्धिक विकृति व विदेशी पाश्चात्य

thearyasamaj.org

कुसंस्कारों का परिणाम है। हां, आवश्यक होने पर विदेशियों व हिन्दी आदि न जानने वालों से अंग्रेजी में संवाद करना बुरा नहीं है परन्तु केवल हमें अंग्रेजी आती है इसलिये हिन्दी भाषियों व घर व परिवार में अंग्रेजी में संवाद करना व व्यवहार करना तुच्छ मानसिकता प्रतीत होती है, जिससे विवेकी महिलाओं को बचना चाहिये। विदेशी-पाश्चात्य देशों की अच्छी बातों को ग्रहण करना अच्छी बात है पर अन्धानुकरण करना आत्महत्या, आत्महनन व आत्म गौरव के विरूद्ध है। स्त्री व पुरूषों को वस्त्र ऐसे पहनने चाहिये जिससे वस्त्र धारण करने का का उद्देश्य पूरा हो। शरीर ढका हुआ हो। वेशभूषा ऐसी हो जिससे व्यक्तित्व, शालीन व मर्यादित दिखाई दे, बेढंगा न दिखे। वेशभूषा ऐसी हो जिससे काम करने में सुविधा हो व जिससे सभ्यता का दिग्दर्शन हो। समझदारों को संकेत करना ही उपयुक्त होता है। हम न तो प्राचीनता की हर बात के समर्थक है और न विदेशी व पाश्चात्य देशों की हर बात के समर्थक व विरोधी। हमारा विचार व मान्यता वह है कि जिससे जीवन का उत्थान हो, हमारा जीवन गरिमा व सादगी से पूर्ण तथा दूसरों की दृष्टि में आदरणीय व अनुकरणीय बने, वैसा हम करें एवं बनें। हम तो इस बात में विश्वास रखते हैं कि आज वह समय आ गया है जब विश्व के एक ही सत्य-मत व सत्य-धर्म, एक जैसे विचार, ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति पर एक समान विचार व मान्यतायें हों, जिससे समाज व देश-विदेश के हर स्तर पर असमानता की भावना पूरी तरह से समाप्त हो जाये। यदि वेदानुसार ईश्वरोपासना, यज्ञ अग्निहोत्र करना व माता-पिता-आचार्यों व बुजुर्गों का सम्मान व सेवा करना अच्छा व सत्य सिद्ध हो तो उसको अपनाना चाहिये अन्यथा फिर सत्य की खोज कर जो सभी मनु-यों के लिए लाभप्रद व जीवन के उद्देश्य को पूरा करने में सहायक हो, उसको ही सबको करना चाहिये। हम सारे विश्व के लोगों का आवाहन करना चाहते हैं कि वह वेद और महर्षि दयानन्द की सभी मान्यताओं, सिद्धान्तों व विचारों का अध्ययन व परीक्षा करें और जो उन्हें असत्य प्रतीत हों उसको आर्य जगत के विद्वानों को अवगत करायें जिससे असत्य मान्यताओं व परम्पराओं, आर्य समाज या अन्य मत-मतान्तरों की, का प्रचलन बन्द हो सके और केवल सत्य मान्यताओं का ही प्रचलन समाज व देश विदेश में हो। हमारे जीवन का एक उद्देश्य सत्य को जानना व उसको मानना व अपनाना ही है। सत्य केवल एक और केवल एक ही है। सत्य से विमुख व्यक्ति को मनुष्य कहना सम्भवतः मनुष्य शब्द का अप-प्रयोग है।

आजकल देश भर में महिलाओं के प्रति अपराध, उत्पीड़न व बलात्कार जैसी घटनाओं में वृद्धि के समाचार मिल रहे हैं। **एक समय था जब हमारे देश के एक राजा अश्वपति ने यह घोषणा की थी कि मेरे राज्य में कोई मद्यपान नहीं करता, कोई जुआ नहीं खेलता, कोई व्यभिचारी नहीं है तो व्यभिचारिणी होने का तो प्रश्न ही नहीं है।** उस राजा ने संध्योपासना व अग्निहोत्र करने की राजाज्ञा जारी करके सन्ध्या व यज्ञ न करने को दण्डनीय अपराध घोषित कर दिया था। आज हम प्राचीन अच्छे वैदिक मूल्यों को छोड़कर पश्चिमी मूल्यों व वहां की भोग प्रधान कुसंस्कृति के अभ्यस्त हो रहे हैं जिसका परिणाम आज नारी के प्रति नाना प्रकार के अपराध हो रहे है। यदि हम अपराध मुक्त समाज का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें लगता है कि इसका एक ही उपाय है और वह ईश्वर, वेद व ऋषियों द्वारा प्रवर्तित धर्म, संस्कृति व सभ्यता को अपनाना होगा। उसमें देश काल व परिस्थिति के अनुसार न्यूनाधिक परिवर्तन किया जा सकता है परन्तु उसकी आत्मा को सुरक्षित करते हुए ही ऐसा करना उचित होगा। यही काम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने समय सन् 1824-1883 में किया था। नारियों के प्रति अपराध व अन्य अपराधों का एक कारण संस्कार विहीन शिक्षा, अशिक्षा, कुसंस्कार, अज्ञानता, बेरोजगारी, समाज में आर्थिक व सामाजिक असमानता व असन्तुलन, सामाजिक, आर्थिक व नैतिक भ्रष्टाचार, पाखण्ड, अन्ध-विश्वास व कुरीतियां, मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष व अवतारवाद की मिथ्या मान्यतायें आदि अनेक कारण हैं जिनके कारण समाज में विकृतियां व असन्तुलन उत्पन्न होता है व हुआ है। इसके लिए सरकार व पुलिस विभाग को प्रभावशाली, न्यायपूर्ण व निष्पक्ष आचरण का परिचय देना होगा व अन्याय दूर करने का दृण संकल्प लेना होगा, तभी कुछ हो सकता है। इस विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है परन्तु समाज से संस्कारयुक्त शिक्षा द्वारा अज्ञानता मिटाकर व सामाजिक असन्तुलन दूर करने के उपायों को प्राथमिकता देने का हर सम्भव प्रयास, कठोर नियम बनाकर भी, करना चाहिये। अपराध रोकने में कठोर व त्वरित दण्ड भी सहायक होता है, इसका क्रियान्वयन आवश्यक है।

वेदों का एक मन्त्र है **'भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।'** इस मन्त्र में कहा गया है कि दिव्य गुण युक्त सृष्टि यज्ञ के विधाता प्रभो ! **हम आपकी कृपा से कानों से उत्तम शब्द ही सुनें, आंखों से अच्छा ही देखें, स्थिर व सुदृढ़ अंगों और शरीरों से आपकी ही स्तुति करते हुए आपके द्वारा हमारे कर्मानुसार नियत आयु को पूर्ण रूप से प्राप्त होवें तथा अकाल मृत्यु के ग्रास न बनें।** इस वैदिक शिक्षा को हमें देश के प्रत्येक बालक व बालिका को हृदयगंम कराना है। जब हम कानों व आंखों से बुरा न सुनेंगे और देखगें और इसके स्थान पर हितकारी वचन सुनेंगे और माता-पिता-आचार्यों के दर्शन कर उनकी सेवा-सुश्रुषा करेंगे तभी अपराध समाप्त होने की आशा है और समाज का सुधार होगा।

फोनः 09412985121

REALITIES OF LIFE

We spend our time cribbing over trivial issues or trying to accumulate things that we actually do not need .The possession of material things breeds attachment and deviates us from our true goal of life that is self-realisation .

Many small experiences in life go out to prove and teach lesson like :

(i) life is a gift and we should learn to nourish it with a diet of love and forgiveness.

(ii) One should refrain from over attachments with anything like wealth,relatives, friends etc.as in the end these prove it be quite futile,and prove to be an obstruction in our path of self realization.

There Is no use of confusing our minds with past and future . it is the present that is most valuable treasure of our life.

Why not try to nourish it with happy thoughts and make the most of it by constantly remembering and thanking him. This will help us remain un-affected when confronted with adversities .

The greatest reality in one's life is "death " , and this fact should be accepted gracefully .

Though we are helpless puppets dancing before. His will. Efforts to be caring and useful to others should never be hampered till one lives .

- Sudarshan roy

thearyasamaj.org

रंग हमारी मानसिकता को प्रभावित करते हैं!

–डॉ. अशोक जैन सहजानन्द

इंद्रधनुष के सात रंग अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। इंद्रधनुष प्रकृत्या परिवर्तनशील है परंतु जब भी वह दिखता है एक-सा ही दिखता है। ये सात रंग हैं- बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल। सात रंगों का सात ग्रहों, सात शरीर-चक्रों, सात स्वरों, सात रत्नों, सात नक्षत्रों, पांच-तत्व और पांच इंद्रियों से घनिष्ठ संबध है। नीले आकाश का रंगीन इंद्रधनुष केवल हमारी आंखों को ही तृप्त नहीं करता अपितु हमारी शारीरिक क्रियाओं और मानसिकता पर भी व्यापक प्रभाव डालता है।

रंगों का उद्गम स्थान सूर्य है। इसकी किरणों के द्वारा सभी सात रंग वायुमंडल में व्याप्त रहते हैं। पृथ्वी के आसपास के वातावरण के प्रकाश कण वर्णक्रम का नीला अंश बिखेरते हैं और शेष अंश वायुमंडल मं से निकल जाते हैं। मात्र नीले रंग के परिवर्तन के कारण समुद्र व आकाश दोनों नीले नजर आते हैं।

सूर्य के अतिरिक्त अन्य ग्रह भी अपनी शेष रंग की किरणों से मनुष्य के जीवन को प्रभावित करते हैं। चंद्रमा का सफेद, मंगल का लाल, बुध का हरा, बृहस्पति का पीला, शुक्र का नीलाभ श्वत तथा शनि का नीला रंग है। ये रंग अपने-अपने ग्रहों की शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। ज्योतिष विद्या के अनुसार विभिन्न रंगों के रत्नों को धारण करने से दैहिक, वैदिक व भौतिक संतापों का शमन होता है।

किसी व्यक्ति को कोई रंग बेहद पसंद होता है, जबकि वह किसी रंग को बिलकुल पसंद नहीं करता, इसका कारण यह है कि रंगों के साथ व्यक्ति के भावनात्मक संबंध होते हैं। रंग आपके व्यक्तित्व को रेखांकित करते हैं। चमकीले रंगों का प्रभाव गहरा होता है। रंग परिवर्तन भाव परिवर्तन का प्रमुख कारण है। आपने भी अनुभव किया होगा कि लाल रंग मन को उत्तेजित करता है, इतना ही नहीं लाल रंग के कारण वही कमरा छोटा दिखने लगता है, जबकि नीले रंग के कारण वही कमरा बड़ा दिखता है।

हमारे शरीर में मूल सात रंग हमारी कोशिकाओं में व्याप्त हैं, संचित हैं। ये सभी शरीर को सक्रिय और स्वस्थ रखने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि इनमें से एक रंग की भी कमी हो जाए तो शरीरिक क्रिया भंग होने लगती है। रंगो के द्वारा ही हमारी बीमारी का पता चलता है। रंगों के द्वारा ही हमारी बीमारी का पता चलता है। इसीलिए डॉक्टर बीमार व्यक्ति की आंख, जीभ, पेशाब, थूक को देखता है। शरीर की स्वस्थता, रुग्णता, स्वभाव व चरित्र का रंगों से गहरा संबंध है। रंग मनोवैज्ञानिक प्रभाव के बल पर मानव जीवन में विशेष महत्त्व रखते हैं।

अंतर नहीं – वस्तुतः रंग और प्रकाश में बहुत अंतर नहीं है। रंग में प्रकाश और ध्वनि सम्मिलित है। ध्वनि दो रूपों में आकार ग्रहण करती है। ये दो रूप हैं- वर्ण और अंक। वर्ण और अंक का रंगों से गहरा संबंध है।

अंकों के रंग इस प्रकार हैं-

एक का रंग-लाल
दो का रंग- केसरिया
तीन का रंग- पीला
चार का रंग- हरा
पांच का रंग- नीला
छह का रंग – बैगनी
सात का रंग- जामुनी
आठ का रंग-दूधिया (सफेद)
नौ का रंग – दूधिया (चार्मिन)

जो ध्वनि सीधी निकलती है उसका रंग अलग होता है और जो ध्वनि चक्र (गुच्छे) में से निकलती है उसका रंग कुछ और होता है। ध्वनि चक्रों से संबद्ध होकर शक्ति और ऊर्जा में बदलती है। विभिन्न प्रकंपन आवृत्ति में प्रवृत्त होने वाला प्रकाश ही रंग है। प्रकाश, रंग और ध्वनि पृथक-पृथक तत्व नहीं हैं अपितु एक ही तत्त्व के अलग-अलग प्रकार हैं। इनमें से किसी एक के माध्यम से अन्य दो को प्राप्त किया जा सकता है।

भावों का अनुभव –'महामंत्र णमोकारः वैज्ञानिक अन्वेषण' ग्रंथ में एक उद्धरण है कि रूस की एक अंधी महिला हाथों से रंगों को छूकर उससे उत्पन्न होनेवाले भावों का अनुभव कर लेती थी। वह थोड़ी ही देर में उन रंगों का नाम भी बता देती थी। लाल रंग की वस्तु को छूने पर उसे गरमाहट का अनुभव होता था। हरे रंग के स्पर्श से उसे प्रसन्नता का अनुभव होता था। नीले रंग की वस्तु को छूने पर उसे ऊंचाई और विस्तार का अनुभव होता था।

रंगों का सुख, समृद्धि और चिकित्सा के क्षेत्र में भी बहुत महत्व है। लाल रंग में गरमी होती है, नाड़ियों को उत्तेजित करना इसकी विशिष्ट प्रवृत्ति है। चोट या मोच में इसका प्रयोग होता है। यौन दौर्बल्य में इसका अद्भुत प्रभाव होता है। नारंगी रंग भी उष्णता देता है। दर्द को दूर करने में यह सफल है। पीला रंग हृदय के लिए शुभ है। यह मानसिक दुर्बलता दूर करने के लिए टॉनिक है। मानसिक उत्तेजना को भी यह दूर करता है। हरा रंग नेत्र दृष्टिवर्धक है। शांत और शमनकारी है। फोड़ों या जख्मों को तुरंत भरता है व पेचिश में लाभकारी है। नीला रंग दर्द और खुजली शांत करता है। पाचन क्रिया में तीव्रता के निमित्त आसमानी रंग का उपयोग होता है। तपेदिक शमन है। बैंगनी रंग दमा, सूजन, अनिद्रा में उपयोगी पाया जाता है।

मंत्रों में भी रंग का विशेष महत्त्व है क्योंकि रंग के द्वारा एकाग्रता, ध्यान, समाधि और आत्मोपलब्धि तक सरलता से पहुंचा जा सकता है। रंगों का मनोनियंत्रण में सर्वाधिक महत्त्व है। रंगों के माध्यम से हमारी आध्यात्मिक यात्रा सहज हो सकती है। रंग तो सशक्त माध्यम है- सिद्धि की अवस्था में साधन स्वतः लीन हो जाते हैं।

–मानद निदेशक, के.एस. फाउंडेशन
बी-4/263, यमुना विहार, दिल्ली

HOPE

1. "HOPE" is our constant companion even in times of distress.
2. "HOPE" gives us the will and determination to make it to the very top.
3. When the night draws the curtain and pins it with a star, don't get disheartened my dear friend, for the dawn is not too far .
4. All bad times may fall on you , but still keep faith in what to do,because there is someone up and above, you who is always there to give you strength.
5. HOPE kindles and rekindles the flame of ambition.

- Sudarshan roy

thearyasamaj.org

R.N. DEL BIL/2007/22120
DL (C)-14/1181/2011-2013

ओ३म्

Date of Posting 12 & 13, at S.R.T. Nagar, Post Office, ND-55

आर्यसमाज राजेन्द्रनगर

का

63वां वार्षिकोत्सव

शनिवार 11 अप्रैल 2015 से रविवार 19 अप्रैल 2015 तक

महिला सम्मेलन 11 अप्रैल 2015 समय प्रातः दोपहर 1:00 बजे से सायं 5:00 बजे तक
बाल सम्मेलन रविवार 12 अप्रैल 2015 समय प्रातः 8:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक

दैनिक कार्यक्रम (सोमवार 13 अप्रैल से शनिवार 18 अप्रैल तक)

प्रातः कालीन सत्र

अथर्ववेदीय बृहद् यज्ञ प्रातः 6.30 से 8.00 बजे तक

यज्ञ ब्रह्मा : डॉ. शिवदत्त पाण्डेय (सुल्तानपुर)
सहयोगी : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

सायं कालीन सत्र

(13 अप्रैल सोमवार से 18 अप्रैल शनिवार तक)

भजन : सायं 7.00 से 8.00 बजे तक श्री हेमन्त शास्त्री जी
वेद प्रवचन : रात्रि 8.00 से 9.00 बजे तक डॉ. शिवदत्त पाण्डेय जी

सायंकालीन प्रवचनों के विषय

सोमवार 13 अप्रैल 2015	मनुष्य जीवन का उद्देश्य
मंगलवार 14 अप्रैल 2015	मानव सुधार से ही समाज सुधार
बुधवार 15 अप्रैल 2015	सन्ध्या की वैज्ञानिकता
गुरुवार 16 अप्रैल 2015	संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म – यज्ञ
शुक्रवार 17 अप्रैल 2015	सुख का मूल वैदिक धर्म
शनिवार 18 अप्रैल 2015	ऋषि दयानन्द की आध्यात्मिकता

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह रविवार 19 अप्रैल 2015

यज्ञ पूर्णाहुति : प्रातः 8:00 से 9:00 बजे तक
प्रसाद वितरण : 9:15 से 9:45 तक
ध्वजारोहण : 9:00 से 9:15 तक
भजन : 9:45 से 10:15 तक

आर्य महासम्मेलन (विषयः आर्य समाज की दशा एवं दिशा) समय : 10:15 से 12:30 बजे तक

अध्यक्षता	: डॉ. शिवदत्त जी पाण्डेय
मुख्यवक्ता	: आचार्य श्यामदेव जी
वक्ता	: आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी, डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री जी
मुख्य अतिथि	: श्री के.एल. गंजू जी, राजदूत, कामरोस संघ
संयोजक	: श्री सतीश चन्द्र मैहता जी
सह–संयोजक	: श्री नरेन्द्र वलेचा जी
विशिष्ट सेवा सम्मान	: आर्य समाज एवं आर्यसंस्थाओं को विशेष सहयोग के लिए
पारितोषिक वितरण	: 12:30 बजे
धन्यवाद, शान्तिपाठ	: श्री अशोक सहगल जी
ऋषिलंगर	: 1:00 बजे
सौजन्य से	: स्व. श्री द्वारकानाथ जी सहगल एवं माता वैष्णो देवी सहगल जी की सुपुत्री एवं दामाद श्रीमती सुरीला खत्री जी एवं ओम प्रकाश खत्री जी के सुपुत्र एवं पुत्रवधू श्री शिवा खत्री व श्रीमती महक खत्री उज्जैन निवासी द्वारा

आप इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं !

Printed and published by **Sh. S.C. Mehta** Secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Gurmat Printing Press, 1337, Sangatrashan, Pahar Ganj, New Delhi-55 Ph. : 23561625 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. ***Editor :*** **Dr. Kailash Chandra Shastri**